महानगर
वर्ष-4, अंक-07, पृष्ठः 15
मूल्यः एक रुपये

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

RNI/NO/UPHIN49792/16/4/2021

सच की अहमियत

हर सवेरे नया जोश

कानपुर | मंगलवार, 17 सितंबर 2024 | कानपुर, लखनऊ, उत्तराखंड से एक साथ प्रकाशित

सूचना प्रसारण मंत्रालय एवं भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती, नर्सरी डालने का उचित समय माह सितंबर

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। सीएसए के कुलपति के निर्देश के क्रम में कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आर.बी. सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटी कार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी6, बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रवी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र

कानपुर से प्रकाशित

E-mail :- deekshalayapravah@gmail.com

दीक्षालय प्रवाह

वर्ष : 02 अंक : 104 कानपुर, 17 सितम्बर, 2024 पेज-8 मूल्य : 3 रुपये

> पढ़ें पेज 3 पर

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती नर्सरी डालने का उचित समय माह सितंबर

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आर.बी. सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है। इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटी–कार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं। प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी6, बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है। प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है। प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है। डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रवी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें। तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं। नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

स्वतंत्रता की पहली किरण का साक्षी

लखनऊ एवं कानपुर से प्रकाशित

स्वतंत्र भारत

कानपुर, मंगलवार
17 सितम्बर, 2024
भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष 14
सं. 2081 वि.
वर्ष 36, अंक -31 पृष्ठ 12
संस्करण : महानगर

मूल्य : 3 रुपये

epaper : epaper.swatantrabharat.net

web portal : swatantrabharat.net

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती नर्सरी डालने का उचित समय माह सितंबर

स्वतंत्र भारत संवाददाता

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आरण्बीण् सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है। इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक एंटी ऑक्सीडेंट और एंटीकार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं। प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन एए बी6ए बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है। प्याज में आयरनए फेलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है। प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है। डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रवी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें। तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्राए भीमा श्वेताए पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपरए भीमा रेडए नासिक रेड और अर्का कल्याणए अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं। नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 77 कानपुर, मंगलवार 17 सितम्बर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती

नर्सरी डालने का उचित समय माह सितंबर

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आर.बी. सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है। इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक एंटी ऑक्सीडेंट और एंटीकार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं। प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी6, बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है। प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है। प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है। डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रवी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें। तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता

होती है। उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं। नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • मंगलवार • 17 सितम्बर • 2024

वैज्ञानिक पद्धति से करें प्याज की खेती

हारा न्यूज ब्यूरो

नर्सरी डालने का उचित माह सितम्बर

ुर।

बर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी वेद्यालय कानपुर ल्याणपुर स्थित अनुभाग के वरिष्ठ क डॉक्टर आरवी ा बताया कि रवी की फसल अत्यंत ूर्ण है। उन्होंने कि प्याज में एंटी टरी गुण पाया है। इसके अलावा एंटी एलर्जीक, एंटी डेंट और र्सिनोजेनिक गुण हैं। प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में न ए, वी6, वी कांप्लेक्स और सी भी ाता है। प्याज में आयरन, फोलेट और यम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए ।

न्होंने बताया की प्याज का प्रयोग ं तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में जाता है। प्याज हृदय रोग एवं ब्लड को नियंत्रण करने में मदद करता है। ने किसान को सलाह दी है कि रवी की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में जाती है । उन्होंने कहा कि खेत को तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें व क्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज के लिये भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं, जबकि लाल प्याज के लिये भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं।

सीएसए में उगाई गई प्याज की फसल।

उन्होंने कहा कि नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें। उन्होंने कहा कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती

कानपुर, 16 सितम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आर.बी. सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है। इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटीकार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं। प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी-6, बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है। प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है। प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है। डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रबी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत

■ नर्सरी डालने का उचित समय है सितंबर माह

को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं। नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें । उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

वर्ष-11 अंक-197 कानपुर, मंगलवार 17 सितम्बर 2024 पृष्ठ-8

कानपुर से प्रकाशित

AKK NEWS
''सत्य का आधार''

डाक पंजीयन संख्या :
K.P.City-323/2018-20
RNI No :
UPHIN/2014/55306

दैनिक
आज का कानपुर

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती, नर्सरी डालने का उचित समय माह सितंबर

आज का कानपुर

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आर.बी. सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटी कार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी6, बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रवी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

मौसम
अधिकतम तापमान 33.c
27.c न्यूनतम तापमान
बाजार
सोना 73.840g
चांदी 87.000 kg
सेंसेक्स 81,053.19

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

04 सहमति की राह पर सरकार, नीतिगत मुद्दों पर पुनः विचार जरूरी

अशनूर कौर ने टुकटुक पर एक

वर्ष :10 अंक :225 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ ,मंगलवार 17 सितम्बर 2024 पृष्ठ : 08

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती, नर्सरी डालने का उचित समय माह सितंबर

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर , सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आर.बी. सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है।इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटीकार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं।प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी6, बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है।प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है।प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है।डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रवी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें। तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं।नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।

उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र,गुजरात,संघ प्रदेश,से एक साथ प्रसारित

हिन्दी दैनिक

RNI NO - UTTHIN/2018/76731

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

Email : thegramtodayeditor@gmail.com

मौसम

अधि. 15 | सूर्योदय: 7:31

न्यून. 06 | सूर्योदय: 5:27

मंगलवार, 17 सितंबर 2024

वर्ष: 06 अंक: 274 | पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये

रबी प्याज की वैज्ञानिक पद्धति से करें खेती,

नर्सरी डालने का उचित समय माह सितंबर

दि ग्राम टुडे, कानपुर। (संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर आर.बी. सिंह ने बताया कि रवी प्याज की फसल अत्यंत महत्वपूर्ण है उन्होंने बताया कि प्याज में एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है। इसके अलावा इसमें एंटी एलर्जीक, एंटी ऑक्सीडेंट और एंटीकार्सिनोजेनिक गुण भी होते हैं। प्याज में प्याज में भरपूर मात्रा में विटामिन ए, बी6, बी कांप्लेक्स और सी भी पाया जाता है। प्याज में आयरन, फोलेट और पोटैशियम जैसे खनिज भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया की प्याज का प्रयोग मसालों तथा कच्चा सलाद में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है। प्याज हृदय रोग एवं ब्लड शुगर को नियंत्रण करने में मदद करता है। डॉ सिंह ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि रवी प्याज की नर्सरी सितंबर अक्टूबर के महीने में डाली जाती है उन्होंने कहा कि खेत को अच्छी तरह से तैयार कर क्यारियां बना लें। तथा एक हेक्टेयर हेतु 8 से 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। उन्होंने उन्नतशील प्याज की प्रजातियों के बारे में बताया कि सफेद प्याज हेतु भीमा शुभ्रा, भीमा श्वेता, पूसा सफेद आदि हैं जबकि लाल प्याज हेतु भीमा सुपर, भीमा रेड, नासिक रेड और अर्का कल्याण, अर्का लालिमा प्रमुख प्रजातियां हैं। नर्सरी में प्याज की पौध तैयार होने के उपरांत इसे खेत में रोपाई कर दें उन्होंने बताया कि खेत में पौध रोपाई के पूर्व पौधे की जड़ों को बावस्टीन दवा की 2 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी के घोल में 15 से 20 मिनट डुबोकर रोपाई कर दें ताकि बैंगनी धब्बा रोग से फसल को बचाया जा सके।